International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 424-425

हरियाणा की सूफी परम्परा एक अध्ययन

Daljeet Singh
Ph.D. Student, OPJS University, Churu, Rajasthan, India

प्रस्तावना

1370 ई0 में लिखित मुल्ला दाउद की कृति 'चंदायान' से हिन्दी में सूफी काव्य परम्परा की विविधवत् शुरूआत मानी जाती है। सूफी वह काव्य परम्परा है जो संत काव्य परम्परा के समान ही हिन्दी साहित्य में चल रही थी। यह थी तो निर्गुण भक्ति साहित्य के अंतर्गत ही है परन्तु तरीका एवं सलीका इनका अलग था। दूसरे शब्दों में आलोचक इनको प्रेम मार्गी कवि भी कहते हैं। कहना संगत होगा कि अधिकत्तर सूफी कवि मुस्लिम धर्म से संबंधित थे और इन सबने अपने काव्य का आधार हिन्दू कहानी या पौराणिक आख्यानों को बनाया है। इन आख्यान के आधार पर इन कवियों का काव्य हिन्दू समाज में अप्रतिम लोकप्रिय हुआ इसका सीधा सा अर्थ इन शब्दों से लगाया जाता है कि समान रूप से चलने वाली संत परम्परा की दुरूहता के विपरीत यह आम जन के लिए सहज ग्राह्य एवं स्वीकार्य थी। इसके साथ यहाँ कहना संगत होगा कि इन कवियों की भाषा भी आमजन की थी। ठेठ अवधी इसे आलोचक कहते। लोक नायक कहे जाने वाले बाबा तुलसी का 'मानस' भी साहित्यिक अवधी में रचित है। यहाँ एक बात और कही जानी चाहिए कि आम आदमी साहित्यिक गतविधियों में कम ही रूचि लेता है। इसलिए आम बोली ठेठ अवधी वाले कवि वस्तुत लोक प्रिय रहे। 'पद्मावत्' सूफी साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है एवं इस परम्परा का आधार स्तम्भ भी, ''इसकी रचना रामचरित मानस से 34 वर्ष पूर्व है। दोहे चौपाई का जो क्रम 'मानस' में मिलता है, वही 'पद्मावत' में है परन्तु दोनों का महत्व समान है, उस अवस्था में, जब 'मानस' समन्वय की विराट चेष्टा की सृष्टि करता और मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन एवं संघर्ष की व्याख्या करता, साथ हिन्दी के 'ससि' कवि नरहरि महात्मा के शिष्य तुलसी दास द्वारा लिखा गया तुलना में इन विशेषताओं के पद्मावत कहीं नहीं ठहरता सिवाय इसके कि इस ग्रंथ के आम जन मानस के ह्रदय को छू लिया। यही ह्रदय की छुवन इसे 'मानस' के समकक्ष ले आई।

सूफी काव्य धारा हिन्दी में महत्वपूर्ण हुई और अनेक शोध कार्यों का आधार बनी। भारत के सत्रहवें राज्य हरियाणा की धरती पर भी महत्व पूर्व सूफी परम्परा में महत्वपूर्ण कार्य हुए व विभिन्न सूफी कवियों द्वारा कृति सृजित हुआ। प्रोफेसर नरेश के शब्दों में, ''गत शताब्दियों में, वर्तमान हरियाणा प्रदेश सूफी संतों की साधना स्थली रही है तथा देश के विभाजन तक इस प्रदेश में अनेकानेक खानकाहे, आबाद रही हैं।''[2]

वर्तमान हरियाणा में नारनौल, हॉसी, कैथल, थानेसर, पानीपत, अम्बाला आदि ऐसे स्थान हैं, जहाँ हजारों श्रद्धालु जाकर शीश नवाते हैं और मुराद मांगते है। ये मजार किसी समय में सूफी परम्परा की विभिन्न गतिविधियों का जीवंत केंद्र हुआ करती थी। जैसे हम उपर कह आए हैं कि नारनौल में मख्दमू अमानुद्दीन गौरी जैसे महत्वपूर्ण सूफी संत रहते थे। जिनमें लोगों की आज भी श्रद्धा है। हॉसी का बाबा फरीद चिर काल तक यहाँ रहे एवं साधना व समाज सुधार दोनो महत्वपूर्ण कार्यों को निपटाया। पानीपत की धरती महान अली कलन्दर का कार्य क्षेत्र रहा है। जलाल थानेसरी चिरपरिचित नाम है, जिनकी वाणी आज भी आम जन सुख दुख में गुनगुनाता है। शेख जुनैद हिसार आदि और कितने नामों को गिना जाए, जिनके कार्य सूफी परम्परा को बढ़ावा देने हेतु किए गए थे।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि आरम्भ से ही हरियाणा की धरती विभिन्न प्रकार की देशकालीन एवं सामाजिक गतिविधियों में अपना योगदान देते रहते हैं। यही वह धरती है जहां दुनिया की सबसे प्राचीन पुस्तक 'ऋग्वेद' लिखी गई, यही महाभारत हुआ और यहीं ज्ञान दर्शन, कर्मदर्शन एवं न्याय दर्शन की स्थापना वासदेव कृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से की। सूफी साधक संतो ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया है। यहां बाबा फरीद का नाम लेना, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना होगा। '' हजरत बाबा फरीद ने अपनी हांसी की दरगाह में शिक्षा एवं साहित्य का जो दीप जलाया था, वह चिरकाल तक प्रज्जविल रहा। हांसी के क्षेत्र फरीद की वाणी की लोकप्रियता निर्विवाद रूप से सिद्ध रही।''[1]

उदाहरण देखिए

''काग चुन–चुन खाइये सगल जिसम को मांस।
दो नैना मत खाइयो पिया मिलन की आस।।''

यह सूफी परम्परा में रहस्यवाद की पुष्टि करने वाली बाबा फरीद की पक्तियाँ आज भी हांसी की जनता द्वारा गई जाती है, सत्संग या कीर्तन के रूप में। कहना संगत होगा कि राजाराम शास्त्री ने सूफी संत खैरूशाह का एक बारहमासा पर शोध कार्य किया और इसे सूफी साहित्य का महत्वपूर्ण बारहमासा सिद्ध। किया। इसकी रचना 1616 की है और स्थान शाहबाद मारकंडा का है। सूफी संत शाह गुलाम जिलानी रोहतक थे, उन्होंने अपने प्रबचन हरियाणावी भाषा के माध्यम जनता में दिए। ये प्रवचन इतने सहज एवं रोचक तथा जीवन के मार्मिक प्रसंगो से जुड़े थे कि आम जन आज भी उनको भूल नहीं है। नरेश ने इनका काल 1750–1820 ई0 माना है।

''कबीर और बुल्ले शाह के साथ गुलाम जीलानी का नाम भी लिया जाता है।''[4] आज की बात करें शाह मुहम्मद रमजान शहीद (1769) का नाम है, ये हादी–ए हरियाणा के नाम से प्रसिद्ध थे।''[5] अकायदे–अजीम' इनकी महत्वपूर्ण रचना है यह हरियाणा गद्य की सुंदर रचना है। यहां कहना संगत होगा कि भाषा की दृष्टि से सूफी परम्परा से भिन्न है परन्तु सूफी साहित्य रचना की अनुपम निधि है। यहां एक बात और कहनी संगत होगी, ''यदि उस थाती को एकत्र किया जा सके, खानकाओं, दरगाओं संग्रहालयों या लोगों के विस्मृत पड़ी है, तो इस प्रदेश के सूफी कवियों की एक लम्बी परम्परा के हस्तगत होने की बड़ी आशा है।''[6]

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है। हरियाणा में जो

सूफी साहित्य रचा गया वह निश्चय हरियाणा की अनमोल साहित्यिक विरासत है। यहां के सूफी संतो की जो परम्परा है वह शुद्ध सुफी साहित्य की परम्परा से मेल खाती है। बारहमासा, नरवशिरव वर्णन, जीवन व परम्परा, कथा वस्तु आधार वह सभी तथ्य जो सूफी साहित्य में हैं हरियाणी सूफी में द्रष्टव्य हैं।

संदर्भ सूची

1. अवधी विश्वज्ञान कोश भूमिका से
2. हरियाणा का हिन्दी साहित्य पृष्ठ संख्या 58
3. वही
4. ओरिएंटल कालेज मैगजीन 1932, लाहौर
5. हरियाणा का हिन्दी साहित्य स0 मंगल पृ0–61
6. वही–पृष्ठ–62